पाठ्यक्रम(लेक्चरर काडर की भर्ती परीक्षा के लिए)

विषय : हिंदी

नोट: परीक्षा की कठिनाई का स्तर स्नातकोत्तर रहेगा।

1. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत

(i)काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, काव्य के प्रकार।

(ii)रस सिद्धांत: रस का स्वरूप, रस निष्पत्ति, रस के अंग, साधारणीकरण सहृदय की अवधारणा।

(iii)अलंकार सिद्धांत: मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण।

(iv)रीति सिद्धांत: रीति की अवधारणा, काव्य गुण, रीति एवं शैली, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ।

(v)वक्रोक्ति सिद्धांत: वक्रोक्ति की अवधारणा एवं वक्रोक्ति के भेद।

(vi)ध्वनि सिद्धांत: ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ।

(vii) औचित्य सिद्धांत: प्रमुख स्थापनाएँ एवं औचित्य के भेद।

(viii) छंद विवेचन - छंद के भेद, विशेषतः वर्णिक छंद और मात्रिक छंद

2 .पाश्चात्य काव्यशास्त्र एवं समकालीन आलोचना सिद्धांत

(i)प्लेटो: आदर्शवाद

(ii)अरस्तु: अनुकरण सिद्धांत और विरेचन सिद्धांत

(iii)होरेस: औचित्य सिद्धांत

(iv) लोन्जाइन्स: उदात्त सिद्धांत

(v) टी.एस. इलियट: परंपरा एवं वैयक्तिक प्रज्ञा का सिद्धांत

(vi)मार्क्सवाद

(vii)मनोविश्लेषणवाद

(viii)अस्तित्ववाद

(ix)शैलीविज्ञान

(x)संरचनावाद और उत्तर आधुनिकतावाद

(xi)नारी विमर्श एवं दलित विमर्श

3. हिंदी साहित्य का इतिहास

(i)हिंदी साहित्य का इतिहास, काल -विभाजन, सीमा निर्धारण और नामकरण।

(ii) आदिकाल-आदिकाल की पृष्ठभूमि, सिद्ध और नाथ साहित्य, रासो काव्य, जैन साहित्य, आदिकाल की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, काव्य- धाराएँ, प्रतिनिधि रचनाकार।

(iii)भक्तिकाल- भक्तिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, भक्ति आंदोलन, विभिन्न काव्य धाराएँ,

संत काव्य- प्रमुख संत कवि और उनका योगदान।

सूफी काव्य - प्रमुख सूफी कवि और उनका योगदान।

राम एवं कृष्ण काव्य - प्रतिनिधि कवि और रचनागत वैशिष्ट्य।

(iv)रीतिकाल- नामकरण, परिस्थितियाँ, प्रवृत्तियाँ, विभिन्न धाराएँ, प्रतिनिधि कवि एवं रचनाएँ।

प्रमुख कवि- चंदबरदाई, अमीरखुसरो ,कबीर ,सूरदास, तुलसीदास ,रसखान ,रैदास मीराबाई, गुरु तेग बहादुर, जायसी ,विद्यापति ,केशव, बिहारी, घनानंद, गुरु गोबिंद सिंह ,भूषण और रहीम।

(v)आधुनिक काल: आधुनिक काल की पृष्ठभूमि, नामकरण, काल विभाजन, विशेषताएँ, आधुनिक काल एवं नवजागरण।

भारतेंदु युग :प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और विशेषताएँ।

द्विवेदी युग: प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और विशेषताएँ।

छायावादी युग: प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और विशेषताएँ।

उत्तर छायावादी काव्य की विशेषताएँ ,प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और विशेषताएँ।

प्रमुख कवि: भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', जयशंकर प्रसाद, सुभद्रा कुमारी चौहान ,महादेवी वर्मा ,मैथिलीशरण गुप्त, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत, हरिवंश राय बच्चन, रामधारी सिंह दिनकर, अज्ञेय,मुक्तिबोध ,नागार्जुन, दुष्यंत कुमार ।

4. हिंदी गद्य का आरंभ व विकास

(i) कहानी विधा की विकास यात्रा।

प्रमुख कहानीकार विशेषतः जयशंकर प्रसाद, मुंशी प्रेमचंद, कमलेश्वर, जैनेंद्र कुमार, सुदर्शन।

(ii) उपन्यास विधा की विकास यात्रा।

प्रमुख उपन्यासकार विशेषतः मुंशी प्रेमचंद, फणीश्वरनाथ रेणु, धर्मवीर भारती, यशपाल,भीष्म साहनी।

(iii) नाटक विधा की विकास यात्रा।

प्रमुख नाटककार विशेषतः भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश ,उपेंद्रनाथ अश्क, डॉ लक्ष्मी नारायण लाल, हरिकृष्ण 'प्रेमी' ,जगदीश चंद्र, विष्णु प्रभाकर , धर्मवीर भारती।

(iv) निबंध विधा की विकास यात्रा।

प्रमुख निबंधकार: रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, बाबू गुलाब राय ,रामधारी सिंह, दिनकर, हरिशंकर परसाई ।

(v) हिंदी आलोचना की विकास यात्रा।

प्रमुख आलोचक: रामचंद्र शुक्ल, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा, नामवर सिंह।

(Vi) नव्येतर विधाओं का विकास (संस्मरण, रिपोर्ताज, आत्मकथा, डायरी, यात्रा वृत्तांत आदि)

(Vii) हिंदी पत्रकारिता की विकास यात्रा।

5. भाषा एवं भाषा विज्ञान

(I)भाषा एवं भाषा परिवार: भाषा की परिभाषा, प्रकृति, भाषा के विविध रूप (बोली, उपबोली, मातृ भाषा, राष्ट्र भाषा, राज भाषा ,संपर्क भाषा, अन्तर्राष्ट्रीय भाषा), भाषा परिवार से अभिप्राय एवं आर्य परिवार की भाषाएँ

(II)ध्वनि विज्ञान

ध्वनि की उत्पत्ति प्रक्रिया, ध्वनि यंत्र, ध्वनि के प्रकार, स्वर तथा व्यंजन, स्वरों का वर्गीकरण ,व्यंजनों का वर्गीकरण।

(III)अर्थ विज्ञान

(i)शब्द और अर्थ का संबंध।

(ii)अर्थ परिवर्तन के कारण।

(iii)अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ।

(IV)हिंदी भाषा का अध्ययन एवं मानक हिंदी

(i)हिंदी का स्वरूप - परिचय, हिंदी की उपभाषाएँ, उप भाषाओं की बोलियों का सामान्य परिचय, पश्चिमी हिंदी तथा पूर्वी हिंदी।

(ii)अवधी भाषा का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास, अवधी भाषा की ध्वन्यात्मक एवं रूपात्मक संरचना।

(iii)ब्रज भाषा का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास, ब्रजभाषा की ध्वन्यात्मक एवं रूपात्मक संरचना।

(iv)मानक हिंदी और खड़ी बोली में अंतर

(v)मानक हिंदी की ध्वनियाँ,शब्द भंडार एवं उसके विविध रूप

(vi)मानक हिंदी की रूप संरचना एवं वाक्य संरचना

(vii)हिंदी राज भाषा के रूप में

(V)देवनागरी लिपि

(I)देवनागरी लिपि का उद्भव व विकास।

(ii)देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता और महत्व।

(iii) देवनागरी लिपि के दोष, दोषों का सुधार एवं दोष सुधार के लिए किए गए प्रयास।

(iv) देवनागरी लिपि का मानक रूप तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण।